धर्म जीवन

जून 2006

- मैं अपने इस परम लक्ष्य का पूर्ण अनुरागी होकर –
  - पाप के रुप
    - नीच रागों की दास्तां और पश्चाताप
      - धन विषयक नीच अनुराग
        - हमारे पतन के कारण
          - एक युवा नेता का दुःखप्रद निधन
            - मेरे पुत्र को सिखाओ

मैं अपने इस परम लख्य का पूर्ण अनुरागी होकर–

जग के उपकार में ही अपनी सारी आयु व्यतीत करना चाहता हूँ।

सकल जगत् के सम्बन्ध में उपकार व्रत को ग्रहण करके मेरे लिए संसार में रहना, और मनुष्यों के नाना सम्बन्धों में, जहां–जहां और जिस–जिस प्रकार का असत्य और अहित का राज्य फैला हुआ है, उसके नष्ट करने के लिए संग्राम करना और उनके स्थान में सत्य और हित को उत्पन्न और स्थापन करना, एक लाज़मी बात है। इसीलिए इस देश के लाखों स्वार्थपरायण साधुओं, वैरागियों, सन्यासियों और फ़कीरों की तरह अपने नाना सम्बन्धि यों और उनके सम्बन्धण में नाना उचित कर्तव्य कमों का त्याग मेरा त्याग नही है: किन्तु मिथ्या और अहित अनुरागी आत्माओं ने जो कुछ घोर नरक फैला रखा है और निकट से निकट सम्बन्धों को भी परस्पर के लिए नाना प्रकार से हानिकारक बना रखा है, और जीवन्त धर्म से रहित होकर अधर्म को उच्च अधिकार दे रखा है, जिससे सब प्रकार के सम्बन्धों में नाना प्रकार का निदारुण दु:ख और क्लेश छाया हुआ है, और हाहाकार और आर्त शब्द निकल रहा है, उनके आत्माओं को बदलकर इस अवस्था से निकालने, और उनमें धर्म जीवन उत्पन्न करने के लिए...

अपने इस महा कठिन व्रत और महा कठिन संग्राम में मुझे जिस कदर धन, मान, बढ़ाई, इज्जत, सुख आराम, स्वास्थ्य और बल आदि के त्याग करने की ज़रूरत होगी, वही सब त्याग ग्रहण करना मेरे लिए उचित और विधेय होगा। अपने परम लक्ष्य की सिद्धि के लिए यही सब प्रकार का पूर्ण त्याग, मेरा सच्चा सन्यास होगा।

– भगवान् देवात्मा

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 6
जून 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

पाप के रुप

अपनी धर्म समाज में आठ पापों को सदा के लिए छोड़ने की पहली श्रेणी की ठोस प्रतिज्ञा है। इसलिए आप साथी सेवकों के सामने पाप की यही तस्वीर बनती है कि नशे न करने, मांस अण्डे न खाने, चोरी न करनी, रिश्वत न लेनी, बदचलनी न करनी और विशेष बेबसी के बिना जीव-हत्या न करनी आदि-आदि। इससे भिन्न पाप की कुछ और तस्वीर होती है या पाप के कुछ और रुप भी होते हैं, इस बात का आम सेवकों को कुछ पता नहीं होता।

पाप क्या होता है? पहले यह बात जानने की आावश्यकता है। पाप को मोटे तौर पर समझाने के लिए यह कहा जाता है कि हमारी हर वह क्रिया या हरकत या गति जो किसी भी अस्तित्व को पहले से बिगाड़ दे, खराब कर दे, कमज़ोर कर दे, उसे पाप कहते हैं। किसी को पहले से बिगाड़ना दो प्रकार से होता है, किसी अस्तित्व के बाहरी रुप, शक्ल या आकार को बिगाड़ना, और उसके भीतर दो रुप अर्थात उसको स्वभाव, उसकी फितरत या नेचर को बिगाड़ना।

थोड़ा बारीकी से सोचें तो वास्तव में प्रत्येक वह चिन्ता वा क्रिया जो हमारे आत्मा या रुह की हानि करती हैं, पाप है। पाप सदा हमारी रुह की हानि करने की हरकत होती है, इसीलिए पाप हमेशा रुह Oriented या रुह केन्द्रित या रुह से सम्बन्ध रखता है।

उपरोक्त मोटे पाप इसीलिए पाप हैं और बुरे समझे जाने के योग्य हैं, क्योंकि वह हमारे शरीर की हानि तो करते ही हैं, परन्तु उसके साथ-साथ हमारी रुह की भी हानि करते हैं और सामाजिक हानि भी करते हैं, हमारे अस्तित्व को हानि पंहुचाने की गति को पाप कहते हैं और वह पाप होता है।

उपरोक्त सारे आठ पाप शरीर द्वारा ही होते हैं अर्थात वह मोटी शारीरिक क्रियाएं होती हैं। अब प्रश्न यह है कि पाप का केवल उपरोक्त शारीरिक क्रियायों का ही रुप होता है या उसके कुछ रुप और भी होते है? हां, पाप के उपरोक्त स्थूल रूपों को छोड़कर कुछ सूक्ष्म रूप भी होते हैं। उनके बारे में आगे विचार करते हैं।

पाप के सूक्ष्म रुप कई प्रकार के हैं। वह हैं विश्वास, वचन, चिन्ता, संकेत और दृष्टि आदि

विश्वासः – प्रत्येक मनुष्य कई प्रकार के विश्वास वा अकीदे रखता है। जो विश्वास सत्य वा शुभ मूलक न हों वा मिथ्या वा झूठ मूलक हों, पाप वा बुराई मूलक हों, उनसे हमेशा हानि होती है। मनुष्य के हित वा भले का मार्ग नहीं खुलता। मिथ्या और पाप मूलक

विश्वास मनुष्य के आत्मिक विकास के मार्ग में पहाड़ बनकर खड़े रहते हैं। उसके सच्चे शुभ और हित का मार्ग खुलने नहीं देते। मिथ्या विश्वास आत्मिक हानि करते हैं। जैसे मुस्लिम भाईयों का यह विश्वास कि खुदा ने पशु, पंछी, जीव और चौपाए मनुष्य के खाने के लिए बनाए हैं, यह विश्वास उन्हें कभी शाकाहारी बनने नहीं देगा। उन्हें पशुओं और गाए आदि को काट खाने में पुन्य ही दिखाई देता है, तो उनका हित कैसे होगा? इन्सान के लिए एक समय में चार शादीयां जायज़ हैं, यह विश्वास पाप मूलक है, हानिकारक है। सती होकर स्वर्ग मिलता है, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, स्त्रियों के उचित अधिकारों के विरुद्ध जितने भी विश्वास हैं, वह भयानक वा हानिकारक हैं। पशुओं, पक्षियों, मासूमों के अधिकारों के विरुद्ध जो भी विश्वास हैं, वह हानिकारक है और पाप मूलक हैं। मेरा ही धर्म ठीक है, मेरा ही गुरु ठीक है, मेरा ही धर्म ग्रन्थ ठीक है, इनकी छानबीन की या उचित वैज्ञानिक पड़ताल की कोई आवश्यकता नहीं, यह विश्वास झूठा, भयानक और पाप मूलक है। महा हानि कारक है। शराबी का, मांसाहारी का, व्यभिचारी का सुधार होना अभी सम्भव हो सकता है, अधिकतर मिथ्या विश्वासियों का भला होना असम्भव के लगभग है। जहां कोई तर्क वा दलील काम नहीं करती, वह मिथ्या विश्वास है। अन्ध विश्वास है। अन्ध विश्वासी होना सबसे बड़े मन्द भाग हैं और अत्यन्त भारी भूल है। अपने सच्चे भले या हित के इच्छुक मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह अपने दिल दिमाग को खुला रखें, तर्क, दलील, वैज्ञानिक कसौटी को अपने विश्वासों की पूछ पड़ताल और निरीक्षण करने के योग्य होना चाहिए। इसको किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे सत्य विश्वासों वा मिथ्या विश्वासों में बाल बराबर ही अन्तर होता है। इसलिए इनकी परख़ की सदा बारीक सूक्ष्म सोच वा सूझ के द्वारा ज़रूरत है।

वचनः – हमारे वचनों द्वारा भी हम पाप करते हैं, अपने वचनों, अपनी बोली, बानी हमेशा ठीक होने का हमें एहसास होता है। उसमें कोई दोष वा नुक्स नज़र नहीं आता। हमारे वचन भी पाप वा झूठ मूलक होने के कारण हानि का कारण हैं। प्रत्येक झूठे वाक्य के साथ आत्मिक हानि का होना नेचर का अटल नियम है। आत्मा के भीतर अन्धेरा वा कठोरता का बढ़ना आवश्यक है। झूठे बोल और वचन फसादों, बुराईयों और पापों की जड़ बन जाते हैं। महाभारत का कारण केवल अपने ही देवर को बोले हुए द्रोपदी के कुछ रुखे कटु, तीखे वा चुभने वाले कुछ अपमान जनक बोल थे। महान शैक्सपीयर के उपन्यास की देवी जैसी नायिका डैस्डीमोना के चरित्र के विषय में शैतान आईगो के शत प्रतिशत झूठे ब्यान ने उसके पति ऊथैलो से ही उसका कत्ल करवा दिया। वचन आग लगाने का काम भी करते हैं और दूसरे का मन मोह लेने का काम भी करते हैं। बोली वा वचन द्वारा शैतान लोग बड़े बड़े झगड़े खड़े कर देते हैं। बाप, बेटे को मां बेटी को, भाई भाई को, पति पत्नी को एक दूसरे से फाड़ने का काम करते हैं। एक दूसरे के शत्रु बना देते हैं। कैकई माता से मन्थरा ने ही राम जैसे पुरुष को 14 वर्ष का बनवास दिला दिया। निन्दा करना आग लगाना ही है। निन्दक और फिर झूठा निन्दक सबसे बड़े पापियों में शामिल होता है। निन्दक व्यक्ति अपना स्वार्थ तो सिद्ध कर सकता है, परन्तु अपने शैतानी रुप को चीते की धारियों की तरह कभी तज नहीं सकता। उसके कभी महान या उच्च बनने का तो प्रश्न ही नहीं

उठता। निन्दा चुगली केवल शब्द ही नहीं होते वह निर्दोष पर गोली दागने के समान ही होते हैं। ऊंचे बोल, रूखे बोल, खीझ कर बोले हुए बोल, अशिष्ट और फीके बोल, अश्लील बोल, नीच बोल, पाप के सिवा और कुछ नहीं होते। बहुत धीमें, मीठे, शान्ति भरे सुखी करने वाले बोल, उच्च जीवन के बिना सम्भव नहीं होते।

चिन्ताः – ख्याल वा सोच के साथ भी पाप हो जाता है। शैक्सपीयर ने कहा है, केवल हमारा ख्याल हमें अच्छा व बुरा बनाता है, हमारी सोच के बिना कुछ भी अच्छा वा बुरा नहीं होता। ईसा मसीह ने कहा है कि बदचलनी का ख्याल आने से ही मनुष्य किसी अंश तक बदचलन बन जाता है। गुण चिन्तन महान बना देता है। अवगुण चिन्तन शैतान बनाकर कुछ भी बाकी नहीं छोड़ता। चिन्ता में ही उपकार स्मरण करने से इस पृथ्वी पर स्वर्ग आ जाता है। नाशुकरेपन की चिन्ताओं से ही नर्क उपजता है। सोच वा चिन्ता को चिता समान बताया गया है। नाकामियों वा अधूरी इच्छाओं के बार-बार सोचने से डिपरैशन, low pressure और Heart फेल हो जाते हैं। अपनी सफलताओं, जीतों और उपलब्धियों के विषय में बार-बार सोचने से मनुष्य Depression से निकलता है और उत्साह में आता है। एक व्यापारी के आनाज के कमरे भरे हुए थे। उसने आकाश पर कुछ बादल देखे और ख्याल-ख्याल में शेखचिल्ली की तरह सोचने लगा कि अच्छी बारिश होने से अगली फसल भी अच्छी होगी और अनाज सस्ता हो जाएगा, मुझे घाटा पड़ जाएगा। घाटे के ख्याल आते ही उसका Heart फेल हो गया और वह मर गया।

क्रियाः – शरीर के सम्बन्ध में प्रत्येक हानिकारक क्रिया पाप होती है। यह रूप तो पाप का सब को दिखाई दे जाता है, इसलिए उसे समझाने की आवश्यकता नहीं। संकेत वा ईशारा पाप करवा देता है। पन्ना घाय ने झूठा ईशारा करके ही अपना पुत्र कत्ल करवा दिया था। ईशारों से फसाद खड़े हो जाते है। झूठ और पाप भरा ईशारा सदा पाप होता है।

दृष्टिः – दृष्टि द्वरा भी पाप हो जाता है। एक बार हम बहुत सारे जन एक धार्मिक आश्रम में गए। वहां एक सुन्दर स्त्री की मूर्ति लगी हुई थी, हमारे में से एक नौजवान ने आश्रम वासी से पूछा कि यहां यह एक नंगी मूर्ति क्यों लगी हुई है। वहां रहते हुए एक भिक्षु ने कहा कि दोष मूर्ति में नहीं दृष्टि में है। दूसरों की पाक, मासूम और नेक बेटियों, बहनों की तरफ अपवित्र वा नापाक दृष्टि के साथ देख देखकर हम शैतान का रुप धारण कर लेते हैं। करुणा, स्नेह और श्रद्धा भरी दृष्टि हमें फरिशता बनने के राह डाल देती है। घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और क्रोध भरी दृष्टि पाप का स्त्रोत होती है। बन्द आंखों से मूक रहना, मनुष्य को पाप से मुक्त रहने में सहायता देता है। देखकर अनदेखा कर सकता है।

हमारा लक्ष्य है अपने अस्तित्व की, अपने शरीर और रुह की हानि से अधिक से अधिक बचना, अर्थात पाप से अधिक से अधिक बचने का यत्न करना। पाप मोटे, भयानक और स्थूल होते हैं, परन्तु उनका सूक्ष्म और अति सूक्ष्म रूप भी होता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म पापों को देखना अपनी सूक्ष्म नीच गतियों को समझना और उनसे मुक्त होना हमारा सबका पाक अधिकार है। काश! हम सब अपनी योग्यता के अनुसार अधिक से अधिक अपनी सूक्ष्म से सूक्ष्म नीच गतियों को उनके प्रकृत रूप में देख सकें और गुरू कृपा द्वारा उनकी शक्ति पाकर उनसे मुक्त हो सकें।

(बलदेव सिंह)

नीच रागों की दास्तां और पश्चाताप

किस तरह पर एक वा दूसरे नीच अनुराग का दास बनकर एक २ बहुत होनहार आत्मा भी तबाह और बरबाद हो जाता है, उस के विषय में एक जन का अति शिक्षा प्रद पत्र हम पाठकों और विशेषकर अपने सामाजिक जनों के हित के लिए नीचे दर्ज करते हैं। यह जन अपने भीतर बहुत अच्छी प्रकृति रखने वाले और बहुत होनहार आत्मा थे। शुरू उमर से ही उन्हें भगवान् देवात्मा की सेवकी और देव समाज की सभासदी का अति उच्च अधिकार प्राप्त हो गया था। परन्तु उन के एक वा दूसरे नीच अनुराग ने धीरे-धीरे उन्हें ऐसी बुरी अवस्था में पहुंचा दिया, कि वह और तो और भगवान् देवात्मा की सेवकी और देव समाज की सभासदी के अति श्रेष्ट अधिकार को भी खो बैठे। ऐसी बुरी गति में जाकर और इस प्रकार उपरोक्त अति कृपा पात्र अवस्था में पहुंचकर उन को जीवन के नाना अंगों में जिस कदर अधिक घाटा पड़ गया, उसके सारे वृतान्त को छोड़कर उन्हों ने केवल अपने एक पत्र में ही जो कुछ लिखा है, उस से भली भांति प्रगट होता है, कि उनके नीच रागों ने उन्हें कैसी महा कृपा पात्र अवस्था में पहुंचा दिया। वह देव समाज के एक माननिय कर्म्मचारी की सेवा में लिखते है:-

"विशेष सन्मान् के योग्य मेरे हितकारी धर्म्म सम्बन्धी श्रीमान्..... जी! सत्य देव की जय।

आप ने मेरे आत्मिक हित के लिए बहुत लम्बे काल तक जो कोशिशें की हैं, और जिस तरह पर मेरी हर पहलू में भलाई के लिए आप अपना पूरा ध्यान देते रहे हैं, उसे सामने लाकर मैं आप को जितना भी धन्यवाद दूं, वह सब थोड़ा है। परन्तु अत्यन्त शोक। कि मैंने आप की विशुद्ध सेवा की बहुत बड़ी बेकदरी की। मैं अपनी ऐसी अवस्था को सन्मुख लाकर अपने आप को जिस कदर भी लानत मुलामत करूं, उतनी ही थोड़ी है।

आप निश्चय मेरे सच्चे हितकारी थे और मैं आप को अपना हितकारी भी बोध करता था, परन्तु शोक और अत्यन्त शोक! कि मेरे नीच अनुरागों ने मेरी कोई पेश न जाने दी और मैं जिन-जिन नीच अनुरागों का दास बन चुका था, उन्होंने मुझे तबाह करके ही छोड़ा।

मुझे शुरू जवानी में ही सच्चे धर्म्म दाता भगवान् देवात्मा की शरण मिल गई थी, मुझे सच्चे धर्म्म सम्बन्धी और सच्ची धर्म्म समाज भी प्राप्त हो गई थी, उनकी कृपा से एक लम्बे काल तक मेरा विविध अंगों में हित साधन भी होता रहा। मुझे धर्म्म के ऐसे सत्य मार्ग पर चलने का अधिकार प्राप्त था, कि जिस पर चलकर हर प्रकार से मेरा बेड़ा पार हो जाता: परन्तु महा शोक। कि मेरे नीच भावों ने मेरे जीवन की नाव को ठीक मंझधार में डालकर गर्क कर दिया। ओह! इससे बढ़कर मेरा दुर्भाग्य और क्या हो सकता था, कि मुझे सच्चे धर्म्म दाता, धर्म्म समाज और धर्म्म सम्बन्धी प्राप्त हुए, परन्तु मैं फिर भी अपनी नीचताओं से अपना बेड़ा आप गरक कर बैठा। पहले पहल मैं जब अपने नीच भावों का शिकार होने लगा, तब अपनी नादानी से या यह कहो कि अपने घमण्ड से यह समझता था, कि मैं अपनी किसी भी नीचता का ऐसा

शिकार नहीं हूंगा, कि जिस से मैं अपना पीछा न छुड़ा सकूं। मेरा यह खयाल था, कि मैं जब भी चाहूंगा, सब कुछ छोड़कर धर्म के रास्ते पर चल पड़ूंगा। परन्तु हाय! अब जैसी अत्यन्त कृपा पात्र अवस्था में पहुंच चुका हूं, और अपने आप को जैसा विवश और लाचार अनुभव करता हूं, उसे मेरे सिवाय और कोई नहीं जानता।

हाय! मैंने अपने निहायत कड़वे तजरूबे से साक्षात तौर पर जान लिया, कि शुरू-शुरू में मनुष्य की जरा-जरा सी नीचता आखिरकार किस कदर पहाड़ बन जाती है और एक-एक गलत कदम मनुष्य को कहां से कहां पहुंचा देता है। हाय! मैं अभागा यदि उस आदर्श पर जो आप जैसे मेरे हितकारी मुझे पेश करते थे, पूरा न भी उतर सकता, तो भी यदि मैं देव समाज जैसी अद्वितीय और सच्ची धर्म समाज से अलग किए जाने वाले कर्म न करता, तब भी मैं लाखों और करोड़ों मनुष्यों से लाख दर्जे अच्छा होता। परन्तु हाय! शोक। मैं आखिरकार देव समाज की सभासदी के अमूल्य अधिकार को भी खो बैठा।

अब मैं अपनी उपरोक्त अति कृपा पात्र अवस्था को सन्मुख लाकर एक-एक समय जितना शोकातुर और दुखी होता हूँ, उसका किसी तरह पर भी शब्दों द्वारा वर्णन नहीं हो सकता। अब मैं बहुत पछताता हूं। परन्तु

"अब पछताए क्या होता है,
जब चिड़िया चुग गई खेत"।

अब पछताने से क्या बनता है, जो कुछ हो चुका, जो चला गया, वह अब मिल नहीं सकता। जो कुछ गुज़र चुका, अब वापिस नहीं आ सकता। मैंने जो २ गलत कदम उठाए हैं, उन के बुरे फल मेरे साथ हैं। मैं उन से जिस कदर दुखी हूं, और अपनी निगाहों में ही अपने आप को जितना गिरा हुआ देखता हूं, उस को मैं ही जानता हूं। और अधिक क्या लिखूं, मैं अपने जाती तजरूबे की बिना पर पुकार-पुकार कर यह कहता हूं, कि धर्म दाता से परे जाकर कहीं भी कोई ठिकाना नहीं। और ऐसा मनुष्य चाहे अपनी चालाकी और चतुराई पर लाख अकड़े और लाख आडम्बर बनाता फिरे, मगर वह किसी सूरत में भी तबाही से बच नहीं सकता।

अच्छा अब जो कुछ गुज़र चुका, उस को याद करके रोने धोने और पछताने से तो कुछ हाथ नहीं आएगा, अब तो यह सोचना है, कि क्या मेरा अब भी कुछ बन सकता है! इसलिए मैं ज़ोरदार तौर पर चाहता हूं, कि मैं फिर एक बार धर्म संगत में पहुंच कर आप जैसे धर्म सम्बन्धियों से हिदायत लाभ करू, और उन पर चलने का संग्राम करके देखूं और जितना कुछ भी मेरा हित होना सम्भव हो, उस के करने का यत्न करूं।

अन्त में मैं फिर एक बार आप की कृपाओं के लिए हृदय गत भावों से बार-बार धन्यवाद देता हूं और अपनी नीचताओं के लिए दिली शोक और शरमसारी का प्रकाश करता हूं।

आप का नाचीज़
बदनसीब.....।"

प्रिय साथी सेवक सेवकाओं और अन्य पाठक गण। हम अपने-अपने जीवन की भी पड़ताल करें और देखें, कि हमारे भीतर किन-किन नीच रागों और नीच घृणाओं का कहां तक अधिकार हो चुका है। और उन्हों ने अब तक हमारे जीवन को कहां तक हानि पहुंचा दी है। और यदि सम्भव हो, तो न केवल उन से उद्धार लाभ करने के रास्ते पर पड़ें, किन्तु जहां तक सच्चा धर्म जीवन लाभ हो सकता हो, वह जीवन भी लाभ करें।

धन विषयक नीच अनुराग

एक और सेवक लिखते हैं :-मैंने अपने जन्म से ही धन का बहुत बड़ा अनुराग लाभ किया था आयु के बढ़ने के साथ-साथ मेरा यह नीच अनुराग बढ़ता गया, और इस हालत में पहुंच गया कि मैं उसे प्राप्त करने के लिए किसी भी पाप या अपराध के करने के लिए अपने आप को तैयार पाने लगा। इसलिए मैंने धन की प्राप्ति के लिए तरह-तरह के भयानक पाप किए हैं। मेरे जीवन का वही एक मात्र सबसे बड़ा लक्ष्य या मकसद रहा है। मैंने अपनी बड़ी उमर तक कभी यह नहीं समझा था कि धन अपने और औरों के **सच्चे हित साधन का केवल एक जरिया है,** और यह कि वह केवल दयानतदारी से और बिना पाप या अपराध करने के कमाने की वस्तु है, और यह कि इस पाप से आत्मा की कोई हानि होती है, मैं कई प्रकार के कहलाने वाले धार्मिक विश्वास रखकर और कुछ पूजा पाठ के साधन करके भी आत्मा और उसके रुप और उसके बनने और बिगड़ने के तत्वों के विचार से **गहरे अन्धकार** में पड़ा हुआ था। मुझे इन सत्यों के विषय में कोई ज्ञान न था। सौभाग्य से मुझ नीच तक भी **देवात्मा के देव प्रभाव** पहुंचे और मुझे अपने आत्मा का कुछ सच्चा ज्ञान हुआ और मेरी पिछली पाप की ज़िन्दगी में अति आश्चर्यजनक तबदीली आई और तब से पाप के द्वारा धन की कमाई का क्रम बन्द हो गया। फिर मुझ में बीच-बीच में पहले पापों की मैल से पवित्रता और उच्च जीवन लाभ करने का भाव भी जागता रहा। उच्च संगत की इच्छा भी पैदा होती रही, लेकिन धन विषयक अनुराग ने अन्त में इन सब को कुचल दिया। यद्यपि यह सत्य है कि मैंने कई अवसरों पर देव समाज के एक या दूसरे काम के लिए प्रकटतय कई अच्छी-अच्छी रकमें दान भी की मगर वह दान प्राय: किसी उच्च भाव के द्वारा प्रेरित होकर नहीं किया, बल्कि मान और बड़ाई प्राप्त करने के भाव से ही किया और ऐसा करने में भी मेरे धन के नीच अनुराग ने मुझसे कई ऐसी क्रियाएं करवाई कि जिनसे कई सामाजिक जनों के निकट मेरी इज्ज़त में भी कमी आती रही। उदाहरण के लिए यदि मैंने यह वादा किया कि इस भले काम के लिए मैं सौ रुपया दूंगा तो जब उस सौ रुपये भेजने का समय आया, तब मेरे धन अनुरागी दिल ने मेरे अन्दर यह प्रेरणा पैदा की कि क्यों यह सौ का सौ रुपया वहाँ दिया जाए, क्यों न मनीआर्डर के द्वारा उसके भेजने में मुझे जो फीस देनी पड़ेगी, वह इसमें से काट ली जाए। इसी तरह कई और अवसरों पर ऐसी ही क्रियाऐं की हैं कि जिससे मैं एक बार अपनी समाज के किसी भले काम के लिए किसी रकम को देकर और उसके बदले इज्ज़त और मान बड़ाई खरीद कर भी फिर इस धन विषयक नीच अनुराग की गुलामी के कारण यह सोचने लगा हूँ कि इस में से जहां तक सम्भव हो, कुछ फिर वापिस ले लूँ। मैं साफ देखता हूँ कि मुझे अपनी आवश्यकताओं से बहुत बढ़कर आय प्राप्त है, फिर भी मैं इस धन अनुराग का पागल इस प्रकार की शर्मनाक और दूसरों की आंखो में अपमानित करने और अपनी इज्ज़त को खोने वाली चालों से रुक नहीं

सकता और न यह नीच अनुराग मुझे यह पसन्द करने देता है कि मैं उसकी गुलामी को छोड़कर अपनी आयु d sckd hfnuksad ls**उच्च संगत में रहने और उच्च और पुण्यजनक भले कामों के करने में खर्च करुं** ताकि मैं अपने आत्मा को कुछ बेहतर बना कर मत्यु के उपरान्त किसी बेहतर लोक में जाने का अधिकारी बन सकूँ। एक-एक स्त्री तो पचास वर्ष की आयु से बच्चे पैदा होने अवश्य बन्द हो जाते हैं और फिर अपने बच्चों की गन्दगी के पोतड़े नहीं धोती मगर मैं इससे बहुत अधिक आयु में पहुंचकर भी मुर्दा चांदी की ठीकरियों के इकट्ठे करने के पीछे ही लगा रहता हूँ। मुझे अपनी यह हालत इस समय अवश्य अति शोकप्रद, तरसनाक और काली दिखाई देती है, लेकिन क्या मैं इससे कभी उद्धार पा सकूँगा। क्या कभी मेरे भीतर इसके लिए इस हद तक घृणा पैदा होगी, कि मैं किसी तरह इसमें रहना पसन्द न करुँगा। हाय! इस पतनकारी अनुराग के कारण मेरा आत्मा दिनों दिन कठोर बनता जा रहा है, क्योंकि इसमें अब पहले की तरह न तो उच्च संगत कि लिए इच्छा पाई जाती है और न मेरे निज के साधनों में ही कोई जान पाई जाती है और न मेरे निज के साधनों में ही कोई जान पाई जाती है और न मेरी वाणी और उपदेश का ही किसी और पर पहले की तरह कुछ अच्छा प्रभाव होता है कि जो निशानियां मुझे भगवान् की देव ज्योति में साफ दिखाई दे रही हैं कि धन का अनुराग मेरे लिए पतनकारी प्रमाणित हो रहा है। और मैं एक ऐसी चीज़ के पीछे कि जो न तो मरने के बाद मेरे साथ जाएगी और वहां पर मेरे किसी काम आएगी और न किसी ऐसे जन या जनों के हाथों में जाएगी (सिवाय इसके कि मैं उसे किसी भले काम के लिए दान कर जाने के लिए किसी गुप्त प्रबन्ध से तैयार हो जाऊँ कि जिसके अब तक कोई आसार मुझे दिखाई नहीं देते) कि जिससे मेरी समाज या मेरे देश के लोगों का कोई सच्चा भला हो सके, और न मुझे यही प्रतीत होता है कि यदि मैं इस नीच अनुराग के पंजे से अब इस दुनियां में भी न निकल सका तो किसी आने वाले जीवन में कैसे निकल सकूंगा? क्योंकि मैं इस महा पतनकारी अनुराग के घटाने या छोड़ने के लिए इसी तरह कोई इच्छा नहीं रखता, जिस तरह एक-एक शराबी मरते दम तक भी शराब का ज़हर छोड़ना नहीं चाहता। हाय! क्या ऐसे दास पागल मनुष्य के बचाने के लिए नेचर में कोई उपाय पैदा न होगा? (यह कहकर और चीख मार कर बहुत ज़ोर से रोने लगता है, और उसकी इस दयनीय हालत को देखकर और कई जनों के भी आंखों में आंसू जारी हो जाते हैं)

एक और सेवक :- इस समय मेरे सामने अपने जीवन का वह बिल्कुल निराला दिन याद आ रहा है जब कि किसी गुप्त प्रबन्ध से मेरे आत्मा तक एक ऐसी निराली शक्ति की लहर पहुंची कि जिसने मेरे दिल को बहुत ज़ोर से हिला दिया और उस समय मेरे भीतर बार-बार यह प्रेरणा पैदा होने लगी कि तुम संसार के जिस महा-भयानक जाल में फंसे हुए हो, उसमें तुम भी और हज़ारों की तरह नान नीच अनुरागों के दास बन गए हो और नीच अनुरागों के सिवाय धन कमाने को तुमने भी बजाए भलाई का साधन समझने और बनाने के अपना **लक्ष्य** समझा और बनाया हुआ है और ऐसे अनुराग को बढ़ा कर अपने आत्मा को दिनों दिन कठोर और दुर्बल करते जा रहे हो और उसकी भलाई की और से बिल्कुल बेहोश पड़े हुए हो। काटो इस सब जंजाल को और हिम्मत करके आत्मिक

धन की सच्ची और ज़रुरी कमाई के लिए तैयार हो जाओ, विशेषकर जब कि ऐसा प्रबन्ध हो सकता है कि तुम्हारी शारीरिक सब आवश्यकताएं आसानी से बखूबी पूरी हो सकती हैं और उनके सम्बन्ध में तुम्हें कोई फ़िकर भी नहीं हो सकता। उस समय ये उच्च भाव मेरे अन्दर इस कदर ज़ोरदार था कि वह मेरे धन विषयक अनुराग पर गालिब आया, और मैं अपना सब प्रकार का कारोबार बन्द करके भगवान् के देव प्रभावों के द्वारा अपने आत्मा को बेहतर बनाने के लिए देव समाज की उव्व संगत में शामिल हो गया। मेरे घर के लोग भी मेरे साथ आए। कुछ दिन तक मेरी हालत बहुत अच्छी रही, मगर फिर मेरी पत्नी की ओर से जब बार-बार इस प्रकार की प्रेरणा होने लगी कि घर बार छोड़कर यहां आ पड़े हो, यहां हमारा किसी तरह दिल नहीं लगता, तब धीरे-धीरे मुझ पर उसका बुरा प्रभाव होना शुरु हुआ। अब तक मुझ में परहित विषयक कोई ऐसा भाव भी नहीं जागा था कि मैं साधन की सभाओं में योग देने के बाद समाज के एक या दूसरी प्रकार के हितकर काम के करने की स्वंय इच्छा करुं और इसमें छः-सात या आठ घण्टे लगा रह कर तृप्ति या सुख अनुभव करुँ और ऐसा करके अपने आत्मा को **बलवान** करुँ। उसके द्वारा नाना प्रकार की कठिनाईयों का मुकाबला करने के योग्य होऊँ और सच्चे परहित साधन से आत्मा में जिस उच्च परिवर्तन या **धर्म जीवन** की उत्पत्ति होती है, उसे लाभ करुँ। इसलिए यद्यपि मैं अपने बड़ों के कहने से एक या दूसरा काम कर तो देता, परन्तु कोई **परहित विषयक काम** मेरे जीवन का प्रिय काम न बन सका अर्थात् मुझ में किसी भले काम के लिए कोई अनुराग पैदा न हुआ। सम्भव था कि यदि मैं घर वालों के बुरे प्रभावों में रहता होता, तो एक लम्बे समय तक उच्च प्रभावों में रहने के बाद **पर सेवा विषयक कोई उच्च भाव मेरे भीतर पैदा हो जाता**। परन्तु इधर परसेवा विषयक समाज के किसी काम के लिए मेरा जी नहीं जाता था, उधर धन विषयक जो प्रबल अनुराग वर्तमान था, उसने मुझे ढीला पाकर धीरे-धीरे फिर अपना सिर निकाला और वह मेरे हृदय में ऐसी प्रेरणाएं करने लगा कि अपनी पहली जगह में वापिस चलो और लाभ करने के कारोबार में फिर लगो, तब तुम्हें तसल्ली मिलेगी, क्योंकि आदमी अपनी एक या दूसरी इच्छा को पूरा करके ही तृप्ति पाता है। इन प्रेरणाओ ने मुझे अपने आत्मिक हित के मार्ग से फिर बाग़ी बना दिया। मेरी पत्नी के साथ-साथ **मेरा दिल भी उखड़ गया** और मैं मेरे बुरे उपाय सोचने लगा कि जिससे वहां से निकल कर फिर अपने पहले स्थान में जाकर अपने धन विषयक व्यवसाय आरम्भ करुं। ऐसी हालत में मैं दिनों दिन सुस्त होने लगा। अन्त में ऐसे हालात पैदा हो गए कि अपने पहले शुभ संकल्पों को त्याग कर मैं फिर उसी गढ़े में जा गिरा कि जिससे पहले निकला था, और धन और पत्नी के नीच अनुरागों ने मेरा बेड़ा गर्क कर दिया। भगवान् की देव ज्योति में इस समय सब कुछ देख रहा हूँ और अपनी ऐसी अवस्था के लिए कष्ट भी अनुभव कर रहा हूँ। भगवान् के सम्बन्ध में जो मैंने अपनी दुष्टता से कई अनुचित क्रियाएं करके उन्हें बहुत सख्त आघात लगाए और उन्हें अवर्णनीय कष्ट और दुःख पहुंचाए, उनके बुरे प्रभाव से मेरा आत्मा इतना अंधकार से भर गया था, और वह इतना कठोर बन गया था कि मुझे अपना यह सारा पतन, पतन के बुरे और भयानक रुप

में दिखाई तक नहीं देता था, और यदि उनकी शुभ कामनाएं मेरे साथ न होतीं तो सम्भव था कि मैं उनकी सेवकी के महा उच्च अधिकार से ही कट जाता और सदा के लिए केवल तबाही के रास्ता पर पड़ जाता, और सदा के लिए मारा जाता। लेकिन मुझ में कुछ इतनी जान बाकी थी कि भगवान् की शुभ कामनाओं की लहारों के विशेष प्रभावों से मैं **पूरी बगावत और कृतघ्नता के महा पापों से बच गया।** अब बीच-बीच में उनकी देव ज्योति की जब कुछ किरणें मेरे अन्दर प्रवेश करने का अवसर पाती हैं, तब मुझे अपने इस पतन के लिए दुःख होने लगता है और मैं कितनी-कितनी देर तक ग़म और शोक की अवस्था में चला जाता हूँ, मगर अभी तक मेरी पेश कुछ नहीं जाती। ओह! धन और पत्नी के नीच अनुरागों और उनके नीच अधिकार ने मुझे कहां से निकाल कर कहां फेंक दिया? (इतने बयान के बाद उन का दिल भर आता है और उनका गला बोलने से रुक जाता है और वे चुप-चाप बैठ जाते हैं)

एक और सेवकः—मेरे साथी सेवकों! मैं भगवान् की शरण में आने से पहले यद्यिप धन कमाने के काम में ही लगा हुआ था, और सत्य धर्म का मुझे कोई ज्ञान न था और लाखों आदमियों की तरह अपनी सुखदायिनी वासनाओं की तृप्ति ढूढंना और अपने नीच सुखों को प्राप्त करना ही मेरे जीवन का **लक्ष्य** बना हुआ था, लेकिन जब मेरे सौभाग्य से ऐसा समय आया, कि भगवान् के देव प्रभावों की प्राप्ति का मुझे अवसर मिला, तब मेरे आत्मा में बहुत आश्चर्यजनक परिवर्तन आया। मेरे हृदय से धन का अनुराग लगभग सारा ही दूर हो गया। मेरे अन्दर देव समाज को धन के द्वारा सहायता देने की प्रेरणाएं उठने लगीं और मैं इसके लिए अच्छी राशियां भेज-भेज कर उसके परहित विषयक कामों में सेवाकारी होने लगा। उसका फल यह हुआ कि मेरा हृदय दिनों दिन बेहतर होने लगा। मेरे कई प्रकार के बड़े-बड़े पाप तो भगवान् की देव शक्ति से पहले ही नष्ट हो गए थे। फिर कुछ समय के बाद मेरे हृदय में यह प्रबल आकांक्षा उठी कि मैं सब कुछ छोड़ छाड़ कर उनके चरणों में जा रहूँ और उच्च हितकर जीवन लाभ करुँ। आखिरकार यह भाव इतना प्रबल हो गया कि मैं एक अच्छी आय के व्यवसाय को छोड़ कर और घरवालों से जुदा होकर, अकेला भगवान् के चरणों में जा पहुंचा और कई वर्षो तक उनके चरणों में पड़ा रहा और उनके पास रहकर धर्म विषयक शिक्षा पाने के अतिरिक्त मैं कई पर सेवा विषयक काम भी करता रहा उन दिनों मेरे भीतर अपने घर वालों के प्रति इतना प्रबल नीच अनुराग न था, कि जिससे प्रेरित होकर मैं उन के पास भाग जाता। यह सब कुछ मेरे लिए बहुत हितकर था। लेकिन दुर्भाग्य से मेरे भीतर **अहं विषयक महा नीच अनुराग बहुत प्रबल रुप में वर्तमान था।** मैं इसके नीच और पतनकारी प्रभाव से पागल होकर अपने आप को इतना बढ़िया समझता था और अपने रुप का इतना अनुरागी था कि अपनी किसी बुरी या अनुचित क्रिया के विरुद्ध औरों का तो क्या कहना है, खुद भगवान् के मुख से भी जब कोई बात सुनता, तो भड़क उठता और उनके प्रति भी **घृणा** के महा नीच और हानिकारक भाव से भर जाता। इस नीच घृणा भाव के पैदा होने पर मेरा आत्मा सुन्न हो जाता और मेरा आत्मा नरम रहने के स्थान में इतना **कठोर** बन जाता कि फिर उसके अन्दर भगवान् के **देव प्रभावों**

का प्रवेश करना कितने ही समय तक असम्भव हो जाता और मैं ऐसी हालत में इस एक महा नीच भाव के कारण दिनों दिन पतित होता रहता। अन्त में कई वर्षों के बाद अपेक्षाकृत कुछ बेहतरी की हालत में पहुंचने पर मैं एक क्षेत्र में प्रचारक के काम पर लगाया गया। इस काम के शुरू-शुरू में मेरे दिल ने मेरा अच्छा साथ दिया, क्योंकि नाना आत्माओं को भगवान् की शरण में लाने के लिए मैंने इन दिनों में जिस प्रकार अच्छा संग्राम किया था, उसकी याद अब भी मुझे कुछ न कुछ उभारने का काम देती है और जैसी कि आशा हो सकती थी, मेरे परहित विषयक सच्चे संग्राम का फल भी अच्छा निकला। उन दिनों मेरे द्वारा कितने ही आत्मा भगवान् की शरण में आए और उनका बहुत बड़ा हित हुआ। लेकिन एक समय के बाद मेरे घरवालों का अधिकार मुझ पर उसी अंश बढ़ने लगा जिस अंश मेरा अनुराग उनके सम्बन्ध में अधिक होने लगा। यदि मैं घर में न रहता होता तो यह हालत न आती। लेकिन हालात ऐसे थी कि मेरे सिवाय उनकी देखभाल करने वाला कोई और न था। उसका परिणाम यह हुआ कि मैं पहले की अपेक्षा बहुत ढीला और दुर्बल हो गया। मगर भगवान् धन्य है कि जिनकी प्रतिदिन की मंगलकामनाओं और बीच-बीच में उनकी संगत और उनके नाना ज़ोरदार उपदेशों के प्रभावों से मुझ में फिर कुछ बेहतरी आई है और मैंने अपने महानीच अहं अनुराग के वशीभूत होकर उनके सम्बन्ध में महा हानिकारक नीच घृणा मूलक जो कुछ बुरी चिन्ताएं की हैं, उनका मुझे कोई बोध हुआ है, और निज के साधनों की ओर भी मेरी कुछ न कुछ तबीयत जाने लगी है। फिर भी अब तक मुझ में परहित साधन विषयक वह पहला भाव प्रकट नहीं हुआ कि जो एक समय में था और न अब मेरे कहने का इतना प्रभाव और आत्माओं में होता है, जितना कि पहले होता था। **ओह! नीच अनुराग किसी प्रकार के हों, उनमें फंसना वास्तव में अपने आत्मा की तबाही करना है और अपनी अच्छी ताकतों को खोकर और औरों को उनके अच्छे प्रभावों से वंचित करके उनकी भी हानि करना है।** ओह! मैंने धन विषयक नीच अनुराग से तो अवश्य मुक्ति पाई और इस सम्बन्ध में मुझे अपने खर्चो के सम्बन्ध में जिस प्रकार कठिनाईयां आई, उनका मैंने अच्छी तरह मुकाबला भी किया है, लेकिन स्त्री और बच्चों और अहं विषयक अनुरागों के कारण निश्चय मेरे आत्मा को बहुत हानि पहुंची है। क्या ऐसा होगा कि उन से मेरा कभी पूरा उद्धार हो सकेगा? (आंखें डबडबा आती हैं और दिन नरम हो जाता है)

(*"जीवन तत्व" 12 जुलाई 1921 ई०*)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

हमारे पतन के कारण

रामानंद तिवारी

हमारे देश का उन्नत और उदार धर्म भी हमें आत्मरक्षा का बल क्यों न दे सका?

भारत की प्राचीन संस्कृति को बहुत उन्नत और समृद्ध माना जाता है. इतने प्राचीन काल में, जब कि यूरोपीय देशों में सभ्यता का आरंभ भी न हुआ था, जीवन के अनेक महत्त्वपूर्ण तत्त्वों से समन्वित संस्कृति का विकास भारत के लिए निस्संदेह बड़े गौरव की बात है. अपनी इस प्राचीन और मूल्यवान संपत्ति पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व होना चाहिए.

किंतु उत्तरकाल में भारत के पतन, पराजय, और पराधीनता से यह भी स्पष्ट है कि बहुत उन्नत और समृद्ध होते हुए भी हमारी वह प्राचीन संस्कृति पूर्णत: निर्दोष नहीं थी. अवश्य ही उस में कुछ ऐसे दोष बीज रूप में विद्यमान थे जो कालक्रम में अंकुरित और पल्लवित हो कर हमारे पतन और में प्रतिफलित हुए. स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण के लिए इन कारणों पर विचार करना आवश्यक है. अतीत की भूलों को समझे बिना हम वर्तमान का सदपयोग और सुंदर भविष्य का निर्माण नहीं कर सकते.

सदियों की दासता से दलित जाति का जागरण और विकास केवल अर्थहीन आडंबरों और मिथ्या गर्व द्वारा नहीं हो सकता. विज्ञान और विदेशों की सहायता द्वारा बाह्य साधनों का विकास मात्र भी राष्ट्रनिर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है. आत्मपरीक्षा और आत्मपरिशोध द्वारा ही राष्ट्र उन्नति के सजीव पथ पर अग्रसर हो सकता है. इस के लिए हमें अंहकार और दीनता दोनों छोड़ कर सच्चाई के साथ अपने अतीत का सिंहावलोकन करना होगा. प्राचीन भारतीय संस्कृति में जो मूल्यवान तत्त्व हैं, उन्हें अपने समाज में प्रतिष्ठित करना होगा. साथ ही उस में जो दोष हैं तथा जिन के कारण हमारा पतन और अवनति हुई है, उन पर ईमानदारी और निर्भयता के साथ निस्संकोच विचार करना होगा. उन दोषों को स्पष्टत: पहचान कर तथा मन से मान कर ही हम नवीन संस्कृति और राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं. मिथ्या गौरव का दंभ हमें पहले की भांति सदा भुलाता ही रहेगा.

धर्म की महत्ता :

भारत धर्मप्राण देश है. वेदों में धर्म के रूप में ही अत्यंत प्राचीन काल में हमारी संस्कृति का आरंभ हुआ. वेदों के बाद भी भारतीय जनता के जीवन में धर्म ही सब से अधिक प्रभावशाली रहा. अत: सब से पहले धर्म पर ही विचार करना उचित है. भारतीय धर्म बहुत उन्नत और उदार है. उस के मूल्यवान तत्त्व सदा मानव जाति के मंगल मंत्र रहेंगे।

किंतु इतना उन्नत होते हुए भी यह धर्म हमें आत्मरक्षा का बल क्यों नहीं दे सका: यह विचारणीय है. 'धर्मो रक्षति रक्षति: 'की घोषणा करते हुए भी हम आक्रमणकारियों से न अपनी रक्षा कर सके, न अपने धर्म की-यह रूपष्ट है. हमारा धर्म हमारे देश, जाति और अस्तित्व की रक्षा का संबल न बन सका.

देवतावाद का सहारा

इस का मुख्य कारण हमारे धर्म का देवतावाद है, वैदिक धर्म का रूप देवोपासना ही है. पौराणिक युग में यह देवतावाद बहुत समृद्ध हो गया. अवतारवाद इस देवतावाद को और भी गौरवपूर्ण बना देता है. असंख्या देवता और अवतार एक ही ईश्वर के रूप बन कर धर्म का एक संगत रूप प्रस्तुत करते हैं:

किंतु देवतावाद तथा अवतारवाद दोनों का परिणाम यह हुआ कि भारतीय जनता अपने लौकिक हितों के लिए किसी परोक्ष सत्ता पर अवलंबित रहने की अभ्यासी बन गई. देवता और ईश्वर पर अपनी रक्षा का भार छोड़ कर अपने उत्तरदायित्व से उदासीन हो गई. 'यदा यदा हि धर्मस्य' की अलौकिक आशा इस उदासीन जाति का एक मात्र अनिश्चित आश्वासन रह गई. देवतावाद तथा अवतारवाद हमारी धार्मिक भूल के प्रतीक हैं. इन्हीं ने निश्चेष्ट और उदासीन बना कर हमें अपनी रक्षा में असमर्थ बनाया.

दर्शन के क्षेत्र में भारतीय अध्यात्मवाद बड़े गौरव का विषय समझा जाता है. इस में संदेह नहीं कि आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता का अध्यात्मवाद के साथ समन्वय होने पर ही मानव जाति अपने कल्याण का पथ पा सकेगी. किन्तु भारतीय अध्यात्मवाद एकांगी और अपूर्ण है. केवल आत्मा को सत्य मान कर तथा देह और लोक की अपेक्षा कर के जीवन का कल्याण संभव नहीं. देह और लोक की भूमिका पर ही अध्यात्मवाद का आलोक उदित होता है. अध्यात्म के साथ प्रकृति का समन्वय कर के ही जीवन का पूर्ण दर्शन बनता है. श्री अरविंद ने प्राचीन अध्यात्मवाद को एंकागी बताते हुए यही समन्वयपूर्ण दर्शन अपने 'दिव्य जीवन' में प्रस्तुत किया है.

एकांगी अध्यात्मवाद का परिणाम मायावाद हुआ, जिस ने लौकिक जीवन के मूल्यों को हीन बता कर तथा संसार को मिथ्या बता कर हमें दोनों ओर से उदासीन बना दिया. जो मिथ्या है, तथा जिस का हमारे आध्यात्मिक आदर्श में कोई मूल्य नहीं है, उस की रक्षा की प्रेरणा हम कहां से पाएं? एकांगी अध्यात्मवाद को मानते हुए भी हम वस्तुत: प्राकृतिक जीवन में ही रहे, क्योंकि यह अनिवार्य है. किंतु मायावाद के कारण हम लौकिक जीवन को उचित महत्त्व दे कर उसे सुरक्षित और गौरवपूर्ण न बना सके.

एकांगी अध्यात्मवाद तथा मायावाद हमारी दार्शनिक भूल के प्रतीक हैं. एक ने अपूर्ण आदर्श प्रस्तुत कर हमें लोक से उदासीन बनाया और दूसरा इस उपेक्षा का दार्शनिक समाधान बन कर हमारी भ्रांति का कारण बना. इसी भ्रांति के कारण हम लौकिक जीवन व्यतीत करते हुए भी उसे सबल, सुरक्षित और सफल न बना सके.

इन धार्मिक और दार्शनिक भूलों से उत्पन्न होने वाली असफलता को हमारी जिस नैतिक भूल

ने पूर्ण बनाया, उसे हम भाग्यवाद कह सकते हैं. इस भाग्यवाद का मूल धार्मिक क्षेत्र में देवताओं और अवतारों का सहारा लेने में है. तार्किक दृष्टि से कर्मवाद का कितना ही संगत समाधान संभव हो, किंतु सामान्य लोकजीवन में उस का जो परिणाम हुआ वह स्पष्ट है.

भाग्य में विश्वास ने मनुष्य के पुरूषार्थ का पूर्णत: प्रेरणाहीन बना दिया. स्वंय को भाग्य पर छोड़ कर हम अपने जीवन से उदासीन हो गए, भविष्य के निर्माण और वर्तमान के सदुपयोग की कोई उत्सुकता न रही. आज भी साधारण भारतीय कितना भाग्यवादी है।

परलोकवाद और पुनर्जन्मवाद ने मिल कर इस भाग्यवाद की दुर्गतियों में एक मिथ्या आशा और आश्वासन का पुट दे कर हमारी लौकिक उदासीनता को पूर्ण बना दिया.

अहिंसा का परिणाम

संस्कृति के क्षेत्र में अहिंसा का सिद्धांत भारत की अमूल्य देन माना जाता है. अहिंसा मानव कल्याण का एक मात्र मार्ग है, यह स्पष्ट है. किन्तु दूसरे देशों और जातियों के आक्रमणों से रक्षा करने के लिए शक्ति और संगठन की आवश्यकता है.

अंहिसा का आचरण व्यक्ति को प्रभावित कर उस का हृदय पिघला सकता है, किंतु सामूहिक रूप से आक्रमण और अत्याचार के लिए उद्यत जनसमूह में पशुता और बर्बरता की ही प्रधानता रहती है. ऐसी स्थिति में अंहिसा एक असफल सिद्धांत है. शक्ति और सुरक्षा की चेतना के बिना वह भी अध्यात्म की भांति ही एकांगी है.

अहिंसा ने ही हमें दुर्बल बना कर आत्मरक्षा में असमर्थ बनाया. यह एकांगी अंहिसा सामूहिक मनोविज्ञान की एक भयंकर भूल है.

जातिवाद और स्त्री परतंत्रता की सामाजिक भूल ने हमारी उक्त चार भूलों को पूर्ण बना कर हमारे पतन का पथ प्रशस्त किया. भेदभाव से सामाजिक संगठन कमजोर होता है. शूद्रों को दलित बना कर हमारे समाज ने एक बलवान वर्ग का सहयोग खोया. केवल ज्ञान को अपना कर ब्राह्मण शक्ति और धन के दास बन गए. वैश्यों की अर्थपरता ने समाज में अनेक हीनताओं का बीज बोया. क्षत्रिय शक्ति के दंभ और विलास के कारण अकेले देश की रक्षा में असमर्थ रहे. स्त्रियों की परतंत्रता शिशुओं के पालन में दुर्बलता की प्ररेक बन कर हमारे पतन की परंपरा का सूत्र बनी.

उक्त पांचों कारणों का मूल हमारे आगमवाद में है. श्रुति के शब्दों और शास्त्र के आदेश में अंध आस्था स्वतंत्र विचार में बाधक है. स्वतंत्र विचार के बिना कोई भी जाति समय के अनुकूल मार्ग नहीं बना सकती. प्राचीन सत्य समय बदलने पर असत्य हो जाते हैं. अंधविश्वासपूर्वक उन्हीं को मानते जाना पतन का मार्ग है. वेद और शास्त्रों की अतार्किक मान्यता ही देवतावाद, अवतारवाद, भाग्यवाद आदि की अंधनीति का कारण बनी.

स्वतंत्र मानवीय चिंतन के आधार पर ही उक्त भूलों का परिहार कर पुरुषार्थ, समानता, समन्वय, स्वतंत्रता और शक्ति के सुदृढ़ पीठ पर एक समर्थ, संपन्न और सफल राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है.

एक युवा नेता का दुःखप्रद निधन

प्रमोद महाजन का महत्त्व क्या था, इसका पता इसी बात से चलता है कि भाजपा के अध्यक्ष राजनाथसिंह और लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी यात्राएं रद्द कर दी। प्रमोद के बिना भाजपा की कल्पना करना ही कठिन है। प्रमोद ने ऐसे मौके पर दुनिया से कूच किया है जब भाजपा को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। दो बूढ़े नेता लगभग अस्ताचलगामी हो गए हैं, उनके बाद के नेताओं में तलवारें खिंची हुई हैं, उमा भारती ने बगावत का झंडा फहरा दिया है। शीर्ष नेतृत्व से संघ और विहिप खफा हैं, विचारधारा के स्तर पर जबर्दस्त विभ्रम फैला हुआ है, विपक्ष में रहने के कारण दान-दक्षिणा घट गई है और जिस गठबंधन के कारण भाजपा सत्तारूढ़ हुई थी, वह भी ढीला पड़ गया है।

प्रमोद होते तो वो आगे जाकर हर मौके पर सक्रिय होते। वे अपनी खिचड़ी धीरे-धीरे पका रहे थे। वे जल्दी में नहीं थे। उन्हें शीर्ष पर पहुंचने से कोई रोक नहीं सकता था। उन्होंने भाजपा में अपने सभी प्रतिद्वद्वियों को पीछे छोड़ दिया था। यदि प्रमोद महाजन सचमुच रहते तो शीर्ष पर पहुंचते लेकिन तब भाजपा को एक नहीं, कई लोगों की बगावत का सामना करना पड़ता। भाजपा एक गहन अंतर्द्वद्व की आग में नहाती। व्यक्तियों में टक्कर होती। ये टक्करें विचारधारा का जामा पहनकर अपने साथ संघ और विहिप को भी घसीटतीं। भाजपा को आंतरिक महाभारत से गुजरना पड़ता। प्रमोद के प्रस्थान से यह महाभारत तो टल गया लेकिन नेतृत्व का पिटारा दुबारा खुल गया। भाजपा के रजत जयंती अधिवेशन में भावी नेतृत्व की जो मुहर 'लक्ष्मण' के नाम से लगी थी, वह अब पिघल चुकी है। शोक की वेला से उबरते ही भाजपा का यक्ष प्रश्न यही होगा कि अब प्रमोद के बाद कौन?

अपना पूरा जीवन भाजपा के लिए झोंक देने वाले अटलबिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी को उनके जीवन की इस संध्या-वेला में इससे बड़ा झटका क्या लग सकता था? उन्होंने अपना उत्तराधिकारी जितनी आसानी से ढूंढ लिया था, क्या वे प्रमोद महाजन का उत्तराधिकारी भी उतनी ही आसानी से ढूंढ पाएंगे? प्रमोद महाजन पेड़ों पर नहीं लगते, उन्हें रातों रात गढ़ा नहीं जा सकता। ऐसे नेता बनते-बनते ही बनते हैं।

महाजन भाजपा के कर्णधार सिर्फ इसलिए नहीं बने कि वे पार्टी के लिए पैसे का जुगाड़ करते थे। हर पार्टी को पैसा चाहिए। पैसा पैदा करने वाले लोग हमेशा ही बने रहते हैं, क्योंकि पैसा देने वाले हमेशा बने रहते हैं। भाजपा में अकेले प्रमोद ही पैसा नहीं उगाहते थे। कई अन्य नेता भी इस काम में सिद्धहस्त रहे हैं। उन्हें अब थोड़ा परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। प्रमोद की विलक्षणतां यह थी कि वे पैसा उगाहने के साथ-साथ प्रबंधन, भाषण, नीति निर्माण और सप्रेषण में भी पटु थे। उन्हें जो काम सौंप दिया जाए, उसे अंजाम तक पहुंचाने में वे अपनी जान झोंक देते थे। चाहे राजस्थान और असम के चुनाव हों या राम मंदिर की रथ-यात्रा हो, वे अपनी छाप छोड़े बिना नहीं रहते थे। वे भाजपा में रहते हुए भाजपा से अलग थे। उनकी

शैली अलग थी। उनकी बोली अलग थी। वे अटल और आडवाणी, दोनों के हमदम, अपने थे और दोनों के बीच सेतु भी थे। वे शिवसेना और भाजपा, संघ और भाजपा तथा भाजपा और अन्य 22 दलों के बीच पुल का काम करते रहे थे।

संसदीय कार्यमंत्री के नाते उन्हें अपूर्व सफलता मिली थी। वे भाजपा के लिए आडवाणी से भी अधिक अपरिहार्य बन गए थे। जिन्ना को लेकर भाजपा जैसे अडवाणी पर बरसी, पांच सितारा संस्कृति या शिवानी भटनागर की हत्या को लेकर वह प्रमोद महाजन पर नहीं बरसी। यदि 'इंडिया शाइनिंग' की शिकस्त के लिए प्रमोद महाजन की जगह कोई अन्य नेता होता तो उसकी राजनीतिक अत्येष्टि आज से दो साल पहले ही हो जाती। प्रमोद भाजपा की मजबूरी वैसे ही बन गए, जैसे अटलजी बन गए थे। प्रमोद ने अपने दम-खम से भाजपा की संस्कृति ही बदल दी थी। इस अर्थ में प्रमोद एक तरफ थे और पारंपरिक भाजपा व संघ दूसरी तरफ। प्रमोद 21 वी सदी की भाजपा के सूर्य थे। यह सूर्य भरी दोपहरी में ही अस्त हो गया।

प्रमोद सिर्फ भाजपा ही नहीं, राष्ट्रीय राजनीति के नए रुझानों के दर्पण थे। वे विचार नहीं-कर्म, वे भक्ति नहीं-शक्ति, आदर्श नहीं-यर्थाथ के उपासक थे। ऐसे लोग साधनों की पवित्रता का ज्यादा सम्मान नहीं करते। साध्य की प्राप्ति ही उनका लक्ष्य होता है। वे विचारधारा के पचड़े में भी नहीं पड़ता। कौटिल्य के साम, दाम, दंड, भेद उनके महज साधन होते हैं। अर्थ-शुचिता और यौन-शुचिता उनके लिए बच्चों का खेल होती है। शक्ति के उपासक नेतागण तांत्रिक की तरह शुभ-अशुभ, सत्-असत्, और गलत-सही की पहेलियों में भी नहीं उलझते। उनकी नजर अर्जुन की तरफ सिर्फ मछली की आंख पर होती है।

आजकल सभी दलों और सभी नेताओं की आंखें कुर्सी पर लगी होती हैं। नेताओं के पास दो आंखें होती हैं। इसीलिए वे भाजपा के बाहर भी आकर्षण के केन्द्र बन गए थे। यदि वे अगले दस-बीस साल जीवित रहते तो शंका यह थी कि वे न सिर्फ भाजपा का काग्रेसीकरण कर देते, बल्कि भारतीय राजनीति का भी अमेरिकीकरण कर देते। यह खतरा संघ और भाजपा के दूरदंश विचारक लोग बराबर महसूस कर रहे थे। इसीलिए प्रमोद की अचानक अनुपस्थिति यदि कुछ लोगों के लिए जबर्दस्त धक्का है तो कुछ लोगों के लिए ठंडी राहत भी है। प्रमोद की तरह राजीव गांधी, माधवराव सिंधिया, राजेश पायलट भी दोपहरी में ही अस्त हुए। लेकिन प्रमोद का मामला बिल्कुल ही अलग है। भाजपा की दूसरी कतार में आज भी प्रतिभाशाली और चरित्रवान नेताओं की कमी नहीं है लेकिन प्रमोद जैसे भी थे, पहेली थे। प्रमोद अगर शीर्ष पर पहुंचते तो पता नहीं क्या होता? वे राष्ट्र के लिए प्रमोद भी सिद्ध हो सकता थे और प्रवीण भी।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभ्रकार हैं।)

नोटः- किसी संस्था, समाज वा सगंठन जब अपने किसी योग्य, कर्मठ वा वरिष्ठ नेता को अपनी ईर्षा, द्वेष वा स्वार्थ से अलग कर देता है या दुर्भाग्य से वह संसार से चला जाता है, तो न केवल उस के जाने से घाटे ही पड़ते है, बल्कि आने वाली नसलें उसके परिणाम भुगतती है। नेता, नेता होता है, बाकी तो भीड़ होती है।

मेरे पुत्र को सिखाओ

अब्राहम लिंकन बेहद व्यस्तजीवन में भी अपने बच्चों के प्रति कितने जागृत थे उन्होंने अपने पुत्र की अध्यापिका को एक पत्र लिखा यह अनन्त रूप से श्रेष्ट है। यहां लिंकन के पत्र का हिस्सा प्रस्तुत है-

उसको सीखना ही होगा, मैं जानता हूं सभी लोग ठीक नहीं होते, सभी लोग सच्चे नहीं होते। परन्तु यह सिखाओ कि हर बदमाश का भी कोई न कोई 'नायक' होता है।

उसे सिखाओ के हर शत्रु के लिए एक मित्र है।

उसे सिखाओ, मैं जानता हूं कि इसमें समय लगेगा कि कमाया गया एक डॉलर यूं ही मिल गए पांच डॉलरों से ज्यादा कीमती है।

उसको सिखाओ कि हारना सीखे और जीत का आन्नद उठाए।

उसे ईर्ष्या से दूर ले जाओ और उसे खामोश हंसी का रहस्य समझाओ।

उसे जल्दी ही यह सीखने दो कि बैल ही सबसे अधिक आसानी से हेय लिए जाते हैं।

अगर तुम पढ़ा सकते हो तो उसे किताबों में दर्ज दुनिया के आश्चर्य पढ़ाओ और उसे आकाश के पक्षियों के भीतरी रहस्यों पर विचार करने के लिए धूप में मक्खियों तथा हरी नन्ही-नन्ही पहाड़ियों पर फूलों के बारे में सोचने के लिए भी कुछ समय अवश्य दो।

स्कूल में उसे यह सिखाओ कि असफल होना धोखा देने से ज्यादा अच्छा है।

उसे अपने विचारों पर विश्वास करना सिखाओ, चाहे सभी कहें कि वे गल्त हैं।

उसे विनम्र लोगों के साथ विनम्र तथा कठोर लोगों के साथ कठोर बनना सिखाओ।

मेरे पुत्र को इतनी शक्ति दो कि वह कोशिश करे कि वह उस भीड़ का अनुसरण न करे जिसमें हर व्यक्ति एक दूसरे की नकल ही कर रहा हो। उसे सिखाओ कि वह सभी लोगों की बातें सुने लेकिन उसे यह भी सिखाओ कि वह जो कुछ सुने उसे सच्चाई के परदे में छान ले और उसमें से जो अच्छा निकले सिर्फ उसे ही ग्रहण करे।

उसे सिखाओ कि जब वह उदास होता है तो कैसे हंसे। उसे सिखाओ आंसुओ से कोई शर्म महसूस न करे।

उसे पढ़ाओ कि सनकियों को दूर रखे और बहुत अधिक मधुरता से सावधान रहे।

उसे सिखाओ कि वह अपना दिमाग और बाहुबल सबसे अधिक कीमत देने वाले को बेचे परन्तु अपने दिल और आत्मा पर कभी कीमत को मोहर न लगाए।

उसे सिखाओ कि गुर्राने वाली भीड़ में अपने कान बंद कर ले और अगर वह सोचता है कि वह ठीक है तो तनकर खड़ा हो जाए तथा लड़े।

उसमें अधीन होने का साहस आने दें। उसमें बहादुर होने का धैर्य आने दें। उसे सिखाओ कि वह हमेशा मानवता में अटूट विश्वास रखे।

यह एक बड़ा आदेश है, लेकिन देखो तुम क्या कर सकते हो।

सरहद के पार

सरहद के पार से पिछले दिनों 15-16 अध्यपिक गण का एक समूह हमारी Educational Institutions को visit करने के लिए आए। देव समाज कालिज ऑफ ऐजूकेशन की प्रिंसीपल मिसिज सतिन्द्र ढिल्लों और उनकी एक Senior Lecturer Namita Ji के कई महीनों के कठिन संग्राम के बाद यह प्रोग्राम पूरा हो सका। पाकिस्तान से आए इन अध्यापिकों को देखकर उनसे बातचीत करके ऐसा लग रहा था कि यह हमारे ही कोई सम्बन्धी वा मित्र है, फिर आपस में मिलने के लिए इतनी बाधाएं क्यों आती हैं। बहुत से Seminar किए गए, discussions हुई, जिनके द्वारा यहां के अध्यापिकों को वहां के educational system के विषय में जानने का मौका मिला और उधर के अध्यापिकों ने अनुभव किया कि हमारे यहां के system उनसे बहुत advance हैं। आपसी सद्भाव बढ़ा और यही चर्चा होती रही कि जनता दोनों देशों को मिलाना चाहती है, परन्तु हमारे राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए यह सरहदें बनाए हुए हैं।

प्रिंसीपल सतिन्द्र ने उन्हें देवालय और हमारे स्थानों की photoes लाने के लिए कहा था, उन्हें काफी कठिनाई से वहां के एक care-taker से उन्होंने प्राप्त की, परन्तु उस care-taker ने जो शब्द कहे कि अब यहां की photoes लेकर क्या करोगे, एक समय था जब यहां की ईमारतों का Art, tiles देखने योग्य थी, परन्तु जिस निर्दयता से इसे ढाया गया, मुझे उसका बड़ा सदमा लगा, बेशक मैं उनमें से नहीं था। परन्तु मैं इस स्थान की कुछ न कुछ सेवा करता रहता हूँ। इतना बूढ़ा इन्सान उस समय की यादें समोये हुए था।

यह दर्द एक-एक दिल में है, इसलिए समय-समय पर जनता आवाज़ उठाती रहती है। ऐसे ही एक दर्द भरे दिल ने दोनों देशों के प्रधान मन्त्रियों को पत्र लिखें हैं, जो सदर परवेज़ मुशरफ के नाम है वह पत्र नीचे दे रहे है:-

यह उस दरखस्त की नकल है जो पाकिस्तान के राष्ट्रपति जी को उर्दू में लिखी थी,

सेवा में, जनाब सदर पाकिस्तान परवेज़ मुशरफ़ साहिब।

दरखास्त,

तमाम मसायल का कामयाब हल।

गुजारश है, आप बहुत खूबियों के मालिक हैं। आपकी साफ गोई और मीठा मीठा बोलना बहुत अच्छा लगता है। फौज़ी वैसे भी दिल के साफ सुथरे होते हैं। मेरे छोटे भाई भी मेजर वजीरे आजम जनाब मन मोहन सिंह जी करोड़ो में एक हैं, यह आप भी जानते हैं।

मैं पहाड़ का रहने वाला हूँ। 78 साल मेरी उमर है। अपनी मुकदस किताब मैं रोज़ पढ़ता हूँ। मुझ में सब को देखो। देश भक्ति अपना धर्म है।

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा। मैं

सारे हिन्दुस्तान की बात कर रहा हूं। जिसके टुकड़े कर दिए गए। भाईयों, भाईयों को आपस में लड़ाया। कितना माल और जानी नुकसान हुआ इसका कोई अन्दाजा नहीं। इसके बाद आज तक क्या हुआ, इस पर कोई बात चीत नहीं करनी। इस को छेड़ना ही नहीं।

बातचीत करनी है, सारे मुल्क को एक करने की, टुकड़ों को जोड़ने की, भाईयों भाईयों को इकट्ठा करने की और भाई भाई दिल से इकट्ठा होना चाहते हैं। यह बातचीत लगातार जारी रहनी चाहिए। इस के लिए आप सारे मुल्क में रायशुमारी कराएं, अस्सी फी सदी सदी से ज्यादा राय हक में होगी या मिलेगी। जनाब सदर साहब! आप में काबलियत है, हिम्मत है। आप सब कुछ कर सकते हैं। यही उम्मीद लेकर आप की खिदमत में दरखास्त लाया हूँ।

मसले, कश्मीर, एटम और जो सारे मुल्क के और भी मसायल हैं, वह खुद ब खुद खत्म हो जाएंगे।

जो हथियार जो गोला बारुद हमारा गल्त कामों पर जाया होता है, इससे सिर्फ सारे मुल्क की गरीबी ही दूर नहीं हो जाएगी, बल्कि और भी ढ़ेर सारा रुपया बच जाएगा। जो दिमाग और कीमती समय हमारा गल्त सोचों में जाया होता है, वह मुल्क की तरक्की के लिए खर्च होगा और फिर सोने की चिड़िया लौट आएगी। हम किसी बड़ी ताकत से कम न होंगे। डालर के मुकाबले में हमारा रुपया होगा।

अभी मेरी दरखास्त खत्म नहीं हुई, बाकी जनाब के जवाब मिलने पर।

बहुत बहुत सन्मान भाव से

विशेष सूचना

पाठक गण नोट फरमावें कि धर्म जीवन सम्बन्धी किसी प्रकार का भी सम्पर्क करने सम्बन्धी फोन न० में तबदीली हो गई है। अब निम्नलिखित फोन न० नोट फरमावें। 0172-2716914, 0172-4638229

-मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Post